

**राज्य सभा**  
**अतारांकित प्रश्नसंख्या 285**  
**22 जुलाई, 2015 को उत्तरके लिए**

**सरकारी क्षेत्र में इस्पात संयंत्रों का आधुनिकीकरण**

285. श्री परिमल नथवानी:

क्या इस्पात मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) सरकारी क्षेत्र में इस्पात संयंत्रों के आधुनिकीकरण की क्या स्थिति है;

(ख) क्या भारतीय इस्पात प्राधिकरण लिमिटेड के अंतर्गत विभिन्न इस्पात संयंत्रों के विस्तार और आधुनिकीकरण का कार्यक्रम नियत समय से पीछे चल रहा है जिसके परिणामस्वरूप लागत और समय का अतिलंघन हो रहा है;

(ग) यदि हां, तो संयंत्र-वार कारणों सहित तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(घ) सरकार द्वारा इस स्थिति का समाधान करने के लिए क्या उपचारात्मक उपाय किए गए हैं/किए जा रहे हैं?

**उत्तर**

**इस्पाकत और खान राज्यर मंत्री**

**(श्री विष्णु देव साय)**

(क): स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) और राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (आरआईएनएल) ने वर्तमान चरण में क्रूड इस्पात की अपनी उत्पादन क्षमता को क्रमशः 12.84 मिलियन टन प्रति वर्ष (एमटीपीए) से बढ़ाकर 21.40 एमटीपीए करने और 3.0 एमटीपीए से बढ़ाकर 6.3 एमटीपीए करने के लिए आधुनिकीकरण और विस्तार कार्य (सेल के भिलाई, बोकारो, दुर्गापुर, राउरकेला, आईएसपी बर्नपुर और सेलम स्थित विशेष इस्पात संयंत्र तथा आरआईएनएल के विजाग इस्पात संयंत्रमें) आरंभ किए हैं।

सेलम इस्पात संयंत्र में विस्तार परियोजना सितम्बर 2010 में पूरी कर ली गई है। राउरकेला और इस्कोम इस्पात संयंत्रों पर एकीकृत प्रोसेस रूट के अधीन सभी सुविधाएं परिचालन स्थिरीकरण और रेम्पत-अप के अधीन हैं। राउरकेला इस्पात संयंत्र और इस्कोम इस्पात संयंत्र, बर्नपुर की विस्तारित क्षमताओं को क्रमशः दिनांक 1.4.2015 और 10.5.2015 को राष्ट्र को समर्पित कर दिया गया है। बोकारो इस्पात संयंत्र में अपग्रेडिड ब्लोस्ट फर्नेस संख्याधिशिबिल्टई कोक ओवन बैटरी संख्या 1 एवं 2 तथा 1.2 एमटीपीए क्षमता वाली नई कोल्डस रोलिंग मिल जैसी मुख्य सुविधाएं तैयार हैं। भिलाई इस्पात संयंत्र में अयस्क हैंडलिंग संयंत्र और आक्सीजन संयंत्र, एसपी-3 में दूसरी सिंटर मशीन तथा नए कोक ओवन बैटरी के कार्य पूरे कर लिए गए हैं। दुर्गापुर इस्पात संयंत्र में कोक ओवन बैटरी-2, लैडल फर्नेस और ब्लू म-कम-राउन्डस कास्ट्र का पुनर्निर्माण पूरा हो गया है।

आरआईएनएल ने अपनी विद्यमान सुविधाओं यथा ब्लांस्टो फर्नेसों , स्टील मेल्टे शॉप कनवर्टरों और सिन्टिर प्लांट इत्यादि का आधुनिकीकरण कार्य आरम्भ किया है।

(ख) और (ग): आधुनिकीकरण और विस्तार योजना का क्रियान्वयन मुख्यतः क्रियान्वयन के दौरान सामना की गई अप्रत्याशित मृदा परिस्थितियों , परामर्शदाता द्वारा मात्राओं का कम अनुमान लगाने, परियोजना ब्राउनफील्ड होने के नाते लॉजिस्टिक समस्या पैदा होने पीएसयू के ठेकेदारों समेत ठेका एजेंसियों द्वारा अपर्याप्त मात्रा में संसाधन जुटाए जाने इत्यादि के कारण प्रभावित हुआ है। कोई लागत वृद्धि नहीं हुई है , सिवाय आईएसपी विस्तार (1965 करोड़ रुपए) के, जहां कि लागत अनुमान को 14443 करोड़ की पूर्व लागत से संशोधित करके 16408 रुपए किया गया है , जिसके परिणामस्वरूप 13.6 प्रतिशत का वित्तीय अंतर आया है। आईएसपी में लागत वृद्धि के मुख्य कारणों में बीओएफ के सिविल एवं ढांचागत कार्य में वृद्धि , सीसीपी एवं रोलिंग मिल पैकेज , आईडीसी एवं ईडीसी में आनुपातिक वृद्धि तथा भावी वृद्धियों के प्रावधान इत्यादि शामिल हैं।

(घ): विभिन्न कदम यथा परियोजना मैनुअलों की समीक्षा एवं अपडेशन, निर्णय में तेजी लाने के लिए विभिन्न स्तरों पर अधिकार प्रत्यायोजन में वृद्धि , एकीकृत परियोजना प्रबंधन प्रणाली का क्रियान्वयन , नये/ अनुभवी परियोजना प्रबंधकों की भर्ती/ पुनर्तीनाती करके परियोजना प्रबंधन संगठन का सशक्तिकरण और विस्तार योजना के क्रियान्वयन को मॉनीटर करने के लिए बोर्ड उप समिति (बीएससी) का गठन इत्यादि उठाए गये हैं। अन्यर किये गये उपायों में ये शामिल हैं समीक्षा बैठकों, परियोजना प्रमुखों की बैठकों के दौरान विभिन्न संयंत्रों की समस्या के संबंध में विचार विमर्श एवं जानकारी का आदान प्रदान करने के लिए विडियो कानफ्रेंसिंग का व्यापक उपयोग करना , संयंत्रों में परियोजना नियंत्रण कक्षों की स्थापना करना , ठेकेदारों को इस्पात , पाईपों और सेल उत्पादों की आपूर्ति के रूप में सहायता प्रदान करना , फेब्रिकेटिंग स्ट्रक्चर में ठेकेदार की सुविधा के लिए और परिवहन में होने वाले विलम्ब को कम करने के लिए संयंत्र के भीतर/ बाहर फेब्रिकेशन यार्ड हेतु जगह प्रदान करना इत्यादि। संयंत्रों के आधुनिकीकरण और विस्तार कार्य की प्रगति की मंत्रालय में मंत्री और सचिव स्तर पर नियमित समीक्षा की जाती है।

\*\*\*\*\*